थोवा। सादस्स उदीरया संखेज्जगुणा। एइंदिएसु सादस्स उदीरया थोवा, असादस्स उदीरया संखेज्जगुणा। उवरि उवदेसं लहियं वत्तव्वं। परत्थाणप्पाबहुगं जाणिय वत्तव्वं। एवमप्पाबहुअं समत्तं। भुजगार-पदणिक्खेवो वड्ढीयो णत्थि, एगेगपयडिविक्खखत्तादो।

एत्तो उदीरणट्ठाणपरूवणा कीरदे- णाणावरणीयस्स उदीरणाए एक्कं चेव ट्ठाणं। एत्थ (सामित्तं) णाणाजीवेहि भंगविचओ कालो अंतरं अप्पाबहुअं च परूवेयव्वं। णाणावरणीयस्स ट्ठाणपरूवणा समत्ता। दंसणावरणीयस्स दुवे ट्ठाणाणि चदुण्णमुदीरणा पंचण्णमुदीरणा चेदि। एदेसिं ट्ठाणाणं सामित्तं णाणाजीवेहि भंगविचओ। कालो अंतरमप्पाबहुअं च कायव्वं। एवं दंसणावरणस्स ट्ठाणउदीरणा समत्ता।

वेयणीयस्स णत्थि ट्ठाणउदीरणा। मोहणीयस्स ट्ठाणउदीरणाए अत्थि एक्किस्से पवेसओ, दोण्णं पवेसओ, तिण्णं पवेसओ णत्थि, चदुण्णं पवेसओ अत्थि। एत्तो पाए णिरंतरं जाव दसण्णं पवेसओ त्ति वत्तव्वं✡। एक्किस्से पवेसयस्स चत्तारि भंगा। तं जहा- कोधसंजलणस्स उदएण एगो भंगो, माणसंजलणस्स उदएण बिदियो भंगो, मायासंजलणस्स उदएण तिण्णि भंगा, लोभस्स उदएण चत्तारि भंगा। दोण्णं पवेसयस्स बारस भंगा। चदुण्णं पवेसयस्स चदुवीसभंगा। पंचण्णं पवेसयस्स चत्तारि चउवीसभंगा।

असाताके उदीरक स्तोक और साताके उदीरक उनसे संख्यातगुणे हैं। एकेन्द्रिय जीवोंमें साताके उदीरक स्तोक और असाताके उदीरक उनसे संख्यातगुणे हैं। आगे उपदेशको प्राप्तकर कथन करना चाहिये। परस्थान अल्पबहुत्वकी जानकर प्ररूपणा करना चाहिये। इस प्रकार अल्पबहुत्व समाप्त हुआ। भुजाकार, पदनिक्षेप और वृद्धि अनुयोगद्वार यहां नहीं हैं; क्योंकि, एक एक प्रकृतिकी विवक्षा है।

आगे यहां उदीरणास्थानोंकी प्ररूपणा की जाती है- ज्ञानावरणीयकी उदीरणाका एक ही स्थान है। यहां स्वामित्व, नाना जीवोंकी अपेक्षा भंगविचय, काल, अन्तर और अल्पबहुत्वकी प्ररूपणा करना चाहिये। ज्ञानावरणीयकी स्थानप्ररूपणा समाप्त हुई।

दर्शनावरणीयके दो स्थान हैं- चारकी उदीरणाका एक स्थान और पांचकी उदीरणाका एक। इन स्थानोंके स्वामित्व, नाना जीवोंकी अपेक्षा भंगविचय, काल, अन्तर और अल्पबहुत्वका कथन करना चाहिये। इस प्रकार दर्शनावरणकी स्थानउदीरणा समाप्त हुई।

वेदनीयकी स्थानउदीरणा नहीं है। मोहनीयकी स्थानउदीरणामें एक प्रकृतिका प्रवेशक (उदीरक) है, दो प्रकृतियोंका प्रवेशक है, तीन प्रकृतियोंका प्रवेशक नहीं है, चार प्रकृतियोंका प्रवेशक है। चार प्रकृतियोंके प्रवेशकको आदि करके दस प्रकृतियोंके प्रवेशक तक इन स्थानोंका प्रवेशक निरन्तर है। इनमें एक प्रकृतिके प्रवेशकके चार भंग हैं। वे इस प्रकार हैं- संज्वलन क्रोधके उदयकी अपेक्षा एक भंग, संज्वलन मानके उदयकी अपेक्षा द्वितीय भंग, संज्वलन मायाके उदयकी अपेक्षा तृतीय भंग, और संज्वलन लोभके उदयकी अपेक्षा चतुर्थ भंग। दो प्रकृतियोंके प्रवेशकके बारह भंग होते हैं। चार प्रकृतियोंके प्रवेशकके चौबीस भंग होते हैं। पांच प्रकृतियोंके

✡ जयध. (चू. सू.) अ. प. ७५६.

छण्णं पवेसयस्स सत्त चउवीस भंगा। सत्ताणं पवेसयस्स दस चउवीस भंगा। अट्ठण्णं पवेसयस्स एक्कारस चउवीस भंगा। णवण्णं पवेसयस्स छ चदुवीस भंगा। दसण्णं पवेसयस्स एक्को चउवीस भंगा। एदेसिं भंगाणं पमाणपरूवणट्ठमेसा गाहा वुच्चदे। तं जहा—

एक्क य छक्केक्कारस दस सत्त चदुक्कमेक्कयं चेव।
दोसु य बारस भंगा एक्कम्हि य होंति चत्तारि✱ ॥ १ ॥

एवं ट्ठाणसमुक्कित्तणा समत्ता। सामित्तपरूवणाए इमाओ बे सुत्तगाहाओ। तं जहा—

सत्तादि दसुक्कस्सं मिच्छे सण-मिस्सए णउक्कस्सं✱।
छादी य णवुक्कस्सं✱ अविरदसम्मत्तमादिस्स ॥ २ ॥
पंचादि अट्ठणिहणा विरदाविरदे उदीरणट्ठाणा।
एगादी तियरहिदा सत्तुक्कस्सा य विरदस्स✱ ॥ ३ ॥

प्रवेशकके चार चौबीस (२४×४) भंग होते हैं। छह प्रकृतियोंके प्रवेशकके सात चौबीस (२४×७) भंग होते हैं। सात प्रकृतियोंके प्रवेशकके दस चौबीस (२४×१०) भंग होते हैं। आठ प्रकृतियोंके प्रवेशकके ग्यारह चौबीस (२४×११) भंग होते हैं। नो प्रकृतियोंके प्रवेशकके छह चौबीस (२४×६) भंग होते हैं। दस प्रकृतियोंके प्रवेशकके एक चौबीस (२४×१) भंग होते हैं। इन भंगोंके प्रमाणकी प्ररूपणाके लिये यह गाथा कही जाती है। वह इस प्रकार है—

दस, नौ, आठ, सात, छह, पांच और चार प्रकृतियोंके प्रवेशकके क्रमसे एक, छह, ग्यारह, दस, सात, चार और एक (इतनी शलाकाओंसे युक्त चौबीस) भंग; दो प्रकृतियोंके प्रवेशकके बारह, तथा एक प्रकृतिके प्रवेशकके चार भंग होते है ॥ १ ॥

इस प्रकार स्थानसमुत्कीर्तना समाप्त हुई। स्वामित्वकी प्ररूपणामें ये दो सूत्र गाथायें हैं। यथा—

सातको आदि लेकर उत्कर्षसे दस (७, ८, ९, १०) प्रकृतियों तकके चार स्थान मिथ्यात्व गुणस्थानमें होते हैं, अर्थात् इन चार स्थानोंका स्वामी मिथ्यादृष्टि है। सातको आदि लेकर उत्कर्षसे नौ प्रकृतियों तकके तीन (७, ८, ९,) स्थान सासादन और मिश्र गुणस्थानमें होते हैं। छह प्रकृतियोंको आदि लेकर उत्कर्षसे नौ तकके चार (६, ७, ८, ९) स्थान अविरतसम्यग्दृष्टिके होते हैं। पांचको आदि लेकर आठ प्रकृतियों तकके चार (५, ६, ७, ८) उदीरणास्थान विरताविरत (देशविरत) गुणस्थानमें होते हैं। एकको आदि लेकर उत्कर्षसे त्रिप्रकृतिक स्थानसे रहित सात प्रकृतियों तकके छह (१, २, ४, ५, ६, ७) उदीरणास्थान संयत जीवके होते हैं ॥ २-३ ॥

विशेषार्थ— यहां सात प्रकृतियोंको आदि लेकर दस प्रकृतियों तकके जो चार उदीरणा-

---

✱ एक्कग-च्छेक्के (छक्के) क्कारस दस सत्त चउक्क एक्कगं चेव। दोसु च बारस भंगा एक्कम्हि य होंति चत्तारि ॥ जयध. अ. प. ७५८. एक्क य छक्केयारं दस-सग-चदुरेक्कयं अपुणरुत्ता। एदे चदुवीसगदा बार दुगे पंच एक्कम्हि ॥ गो. क. ४८८. ✱ ताप्रतौ 'ण उक्कस्सं' इति पाठः। ✱ जयध अ. प. ७५९. दस-णव-णवादि चउ-तिय-तिट्ठाण णवट्ठ-सग-सगादि चऊ। ठाणा छादि तियं च य चदुवीसगदा अपुव्वो त्ति ॥ गो क. ४८०.

एदासु दोसु गाहासु भासिदासु मोहणीयसामित्तं समप्पदि। एवं सामित्तं समत्तं।

एयजीवेण कालो– एक्किस्से पवेसओ केवचिरं कालादो होदि? जहण्णेण एगसमओ, उक्कस्सेण अंतोमुहुत्तं। दोण्णं पवेसओ जहण्णेण एगसमओ, उक्कस्सेण अंतोमुहुत्तं। चदुण्णं पवेसयस्स जहण्णेण एगसमओ, उक्कस्सेण अंतोमुहुत्तं। पंचण्णं पवेसयस्स जहण्णेण

स्थान मिथ्यादृष्टिके बतलाये गये हैं वे इस प्रकारसे सम्भव हैं– मिथ्यात्व, अनन्तानुबन्धि-चतुष्कमेंसे एक, अप्रत्याख्यानचतुष्कमेंसे एक, प्रत्याख्यानचतुष्कमेंसे एक, संज्वलनचतुष्कमेंसे एक, तीन वेदोंमेंसे कोई एक, हास्य रति और अरति-शोकमेंसे एक युगल, तथा भय व जुगुप्सा; इन दस प्रकृतियोंका उदीरणास्थान मिथ्यादृष्टि गुणस्थानमें पाया जाता है। इन दस प्रकृतियोमें भय व जुगुप्सामेंसे किसी एकके विना नौ प्रकृतियोंका स्थान होता है, भय व जुगुप्सा इन दोनोंके विना आठ प्रकृतियोंका स्थान होता है; तथा भय, जुगुप्सा व कोई एक अनन्तानुबन्धी कषाय इन तीन प्रकृतियोंके विना सातका स्थान होता है। ये तीन स्थान भी मिथ्यादृष्टिके ही सम्भव हैं। उपर्युक्त दस प्रकृतियोंके स्थानमेंसे एक अनन्तानुबन्धी कषायको कम करके मिथ्यात्व प्रकृतिके स्थानमें सम्यग्मिथ्यात्वके ग्रहण करनेपर नौ प्रकृतियोंका स्थान होता है। इसमें भय व जुगुप्सामेंसे एकके विना आठका, तथा दोनोंके विना सातका स्थान होता है। ये तीन उदीरणास्थान सम्यग्मिथ्यादृष्टि गुणस्थानमें ही सम्भव हैं। इन तीनों स्थानमेंसे सम्यग्मिथ्यात्वको कम करके अनन्तानुबन्धी कषायको जोड देनेपर भी जो नौ, आठ व सात प्रकृतियोंके तीन उदीरणास्थान होते हैं उनका स्वामी सासादनसम्यग्दृष्टि होता है। सम्यक्त्व प्रकृति, एक अप्रत्याख्यान कषाय, एक प्रत्याख्यान कषाय, एक संज्वलन कषाय, एक वेद, हास्यादिमेंसे एक युगल तथा भय व जुगुप्सा प्रकृतिको ग्रहण कर नौका; भय व जुगुप्सामेंसे एकके विना आठका, इन दोनोंके ही विना सातका, तथा उपशमसम्यग्दृष्टि एवं क्षायिकसम्य-ग्दृष्टिकी अपेक्षा सम्यक्त्व प्रकृतिको भी छोडकर छहका; ये चार उदीरणास्थान अविरतसम्य-ग्दृष्टि गुणस्थानमें पाये जाते हैं। अविरतसम्यग्दृष्टिके इन चार उदीरणास्थानोंमेंसे एक अप्रत्या-ख्यान कषायको कम कर देनेपर जो आठ, सात, छह और पांच प्रकृतियोंके चार उदीरणास्थान होते हैं उनका स्वामी संयतासंयत होता है। इसके उक्त चारों स्थानोंमेंसे एक प्रत्याख्यान कषायको कम कर देनेपर जो सात, छह, पांच और चार प्रकृतियोंके चार उदीरणास्थान होते हैं प्रमत्त और अप्रमत्तमें वे सब तथा अपूर्वकरणमें सातके बिना तीन स्थान पाये जाते हैं। संज्वलनचतुष्कमेंसे एक और तीन वेदोंमेंसे एक इन दो प्रकृतियोंका स्थान, तथा एक मात्र अन्यतर संज्वलन प्रकृतिका स्थान, ये दो स्थान अनिवृत्तिकरण गुणस्थानमें प्राप्त होते हैं। तीन प्रकृतियोंके स्थानकी सम्भावना ही नहीं है। तथा सूक्ष्म लोभकी अपेक्षा एक प्रकृतिक स्थान सूक्ष्मसाम्पराय गुणस्थानमें भी होता है, इतना यहां विशेष जानना चाहिये।

इन दो गाथाओंकी प्ररूपणा करनेपर मोहनीय कर्मका स्वामित्व समाप्त होता है। इस प्रकार स्वामित्व समाप्त हुआ।

एक जीवकी अपेक्षा काल– एक प्रकृतिक स्थानका उदीरक कितने काल रहता है? वह जघन्यसे एक समय और उत्कर्षसे अन्तर्मुहूर्त काल तक रहता है। दो प्रकृतिक स्थानका उदीरक जघन्यसे एक समय व उत्कर्षसे अन्तर्मुहूर्त काल तक रहता है। चार प्रकृतिक स्थानके उदीरकका काल जघन्यसे एक समय और उत्कर्षसे अन्तर्मूहूर्त मात्र है। पांच प्रकृतिक स्थानके उदीरकका

एगसमओ, उक्कस्सेण अंतोमुहुत्तं । छण्णं पवेसयस्स जहण्णेण एगसमओ, उक्कस्सेण अंतोमुहुत्तं । सत्ताण्णं पवेसयस्स जहण्णेण एगसमओ, उक्कस्सेण अंतोमुहुत्तं । अट्ठण्णं पवेसयस्स जहण्णेण एगसमओ, उक्कस्सेण अंतोमुहुत्तं । णवण्णं✪ दसण्णं पवेसयस्स जहण्णेण एगसमओ, उक्कस्सेण अंतोमुहुत्तं । एवमेगजीवेण कालो समत्तो ।

एगजीवेण अंतरं–– दसण्णं पवेसयस्स अंतरं जहण्णेण अंतोमुहुत्तं, उक्कस्सेण बेछावट्ठिसागरोवमाणि । णवण्णं पवेसयस्स जहण्णेण एगसमओ, उक्कस्सेण पुव्वकोडी देसूणा । अट्ठण्णं पवेसयस्स जहण्णेण एगसगओ, उक्कस्सेण पुव्वकोडी देसूणा । सत्ताण्णं पवेसयस्स जहण्णेण एगसमओ, उक्कस्सेण उवड्ढपोग्गलपरियट्टं । छण्णं पवेसयस्स जहण्णेण एयसमओ, उक्कस्सेण उवड्ढपोग्गलपरियट्टं । जहा छण्णं तहा पंचण्णं । चदुण्णं पवेसयस्स जहण्णेण अंतोमुहुत्तं, उक्कस्सेण अद्धपोग्गलपरियट्टं । एवं दोण्णमेक्किस्से पवेसयस्स वत्तव्वं । एवमेगजीवेण अंतरं समत्तं ।

णाणाजीवेहि भंगविचओ– दसण्णं णवण्णं अट्ठण्णं सत्ताण्णं छण्णं पंचण्णं चदुण्णं पवेसया जीवा णियमा अत्थि । दोण्णमेक्किस्से पवेसया जीवा भजिदव्वा । एवं णाणा–

काल जघन्यसे एक समय और उत्कर्षसे अन्तर्मुहूर्त प्रमाण है। छह प्रकृतिक स्थानके उदीरकका काल जघन्यसे एक समय और उत्कर्षसे अन्तर्मुहूर्त प्रमाण है। सात प्रकृतिक स्थानके उदीरकका काल जघन्यसे एक समय और उत्कर्षसे अन्तर्मुहूर्त है । आठ प्रकृतिक स्थानके उदीरकका काल जघन्यसे एक समय और उत्कर्षसे अन्तर्मुहूर्त मात्र हैं । नौ और दस प्रकृतिक स्थानके उदीरकका काल जघन्यसे एक समय और उत्कर्षसे अन्तर्मुहूर्त मात्र है । इस प्रकार एक जीवकी अपेक्षा काल समाप्त हुआ ।

एक जीवकी अपेक्षा अन्तर– दस प्रकृतिक स्थानके उदीरकका अन्तर जघन्यसे अन्तर्मुहूर्त और उत्कर्षसे दो छयासठ सागरोपम प्रमाण है । नौ प्रकृतिक स्थानके उदीरकका अन्तर जघन्यसे एक समय और उत्कर्षसे कुछ कम पूर्वकोटि काल प्रमाण है । आठ प्रकृतिक स्थानके उदीरकका अन्तर जघन्यसे एक समय और उत्कर्षसे कुछ कम पूर्वकोटि काल प्रमाण है । सात प्रकृतिक स्थानके उदीरकका अन्तर जघन्यसे एक समय और उत्कर्षसे उपार्ध पुद्गलपरिवर्तन प्रमाण है । छह प्रकृतिक स्थानके उदीरकका अन्तर जघन्यसे एक समय और उत्कर्षसे उपार्ध पुद्गलपरिवर्तन प्रमाण है । जैसे छह प्रकतिक स्थानके उदीरकका अन्तरकाल है वैसे ही पांच प्रकृतिक स्थानके उदीरकका अन्तर काल है । चार प्रकृतिक स्थानके उदीरकका अन्तरकाल जघन्यसे अन्तर्मुहूर्त और उत्कर्षसे अर्ध पुद्गलपरिवर्तन प्रमाण है । इसी प्रकारसे दो प्रकृतियोंके और एक प्रकृतिके उदीरकके अन्तरकालका कथन करना चाहिये । इस प्रकार एक जीवकी अपेक्षा अन्तर समाप्त हुआ ।

नाना जीवोंकी अपेक्षा भंगविचय– दस, नौ, आठ, सात, छह, पांच और चार प्रकृतिक स्थानोंके उदीरक जीव नियमसे हैं । दो और एक प्रकृतिक स्थानोंके उदीरक जीव भजनीय हैं।

✪ ताप्रतौ 'एवं णवण्णं' इति पाठः ।

जीवेहि भंगविचओ समत्तो।

णाणाजीवेहि कालो– एक्किस्से दोण्णं च पवेसया जहण्णेण एगसमओ, उक्कस्सेण अंतोमुहुत्तं। सेसट्ठाणप्पवेसयाणं कालो सव्वद्धा। एवं कालो समत्तो।

णाणाजीवेहि अंतरं– एक्किस्से दोण्णं च पवेसंतरं जहण्णेण एयसमओ, उक्कस्सेण छम्मासा। सेसाणं णत्थि अंतरं। एवमंतरं समत्तं।

सण्णियासो– एक्किस्से पवेसओ बेण्हमप्पवेसओ,✪। एवं सेसाणं वत्तव्वं। एवं सव्वट्ठाणाणं परूवणा कायव्वा✱। एवं सण्णियासो समत्तो।

अप्पा बहुअं-सव्वत्थोवा एक्किस्से पवेसया। दोण्णं पवेसया संखेज्जगुणा। चदुण्णं पवेसया संखेज्जगुणा। पंचण्णं पवेसया असंखेज्जगुणा। छण्णं पवेसया असंखेज्जगुणा। सत्तण्णं पवेसया असंखेज्जगुणा। दसण्णं पवेसया अणंतगुणा। णवण्णं पवेसया संखेज्जगुणा। अट्ठण्णं पवेसया संखेज्जगुणा।

आदेसेण णिरयगदीए सव्वत्थोवा छण्णं पवेसया। सत्तण्णं पवेसया असंखेज्जगुणा।

इस प्रकार नाना जीवोंकी अपेक्षा भंगविचय समाप्त हुआ।

नाना जीवोंकी अपेक्षा काल– एक व दो प्रकृतियोंके उदीरक जघन्यसे एक समय और उत्कर्षसे अन्तर्मुहूर्त काल तक रहते हैं। शेष स्थानोंके उदीरकोंका काल सर्वदा है। इस प्रकार काल समाप्त हुआ।

नाना जीवोंकी अपेक्षा अन्तर– एक और दो प्रकृतिक स्थानोंकी उदीरणाका अन्तर जघन्यसे एक समय और उत्कर्षसे छह मास तक होता है। शेष प्रकृतिक स्थानोंकी उदीरणाका अन्तर सम्भव नहीं है। इस प्रकार अन्तर समाप्त हुआ।

संनिकर्ष– एक प्रकृतिक स्थानका उदीरक दो प्रकृतिक स्थानका उदीरक नहीं होता है। इसी प्रकारसे चार, पांच आदि शेष प्रकृतिक स्थानोंको कहना चाहिये। इस प्रकार सब स्थानोंकी प्ररूपणा करना चाहिये। इस प्रकार संनिकर्ष समाप्त हुआ।

अल्पबहुत्व– एक प्रकृतिक स्थानके उदीरक सबसे स्तोक हैं। उनसे दो प्रकृतिक स्थानके उदीरक संख्यातगुणे हैं। उनसे चार प्रकृतिक स्थानके उदीरक संख्यातगुणे हैं। उनसे पांच प्रकृतिक स्थानके उदीरक असंख्यातगुणे हैं। उनसे छह प्रकृतिक स्थानके उदीरक असंख्यातगुणे हैं। उनसे सात प्रकृतिक स्थानके उदीरक संख्यातगुणे हैं। उनसे दस प्रकृतिक स्थानके उदीरक अनन्तगुणे हैं। उनसे नौ प्रकृतिक स्थानके उदीरक असंख्यातगुणे हैं। उनसे आठ प्रकृतिक स्थानके उदीरक संख्यातगुणे हैं।

आदेशकी अपेक्षा नरकगतिमें छह प्रकृतिक स्थानके उदीरक सबसे स्तोक हैं। सात प्रकृतिक स्थानके उदीरक असंख्यातगुणे हैं। दस प्रकृतिक स्थानके उदीरक असंख्यातगुणे हैं।

✪ उभयोरेव प्रत्योः 'वेण्हं पवेसओ' इति पाठः। ✱ सण्णियासो। एत्तो सण्णियासो कायव्वो त्ति अहियारसंभालणवक्कमेदं। एक्किस्से पवेसगो दोण्हमप्पवेसगो। कुदो? परोप्परविरुद्धसहावत्तादो। चउण्हं पंचण्हं छण्णं सत्तण्णं अट्ठण्हं णवण्हं दसण्हं च अपवेसगो त्ति एदमत्थदो लब्भदे, एक्किस्से पवेसगस्स सेसासेसट्ठाणाणमपवेसयभावस्स देसामासयभावेणेदस्स पयट्टत्तादो। एवं सेसाणं। सुगमं। उच्चारणाहिप्पाएण सण्णियासो णत्थि त्ति, तत्थ सत्तारसण्हमेवाणिओगद्दाराणं परूवणादो। जयध. अ. प. १७६३–६४.

दसण्णं पवेसया असंखेज्जगुणा । णवण्णं पवेसया संखेज्जगुणा । अट्ठण्णं पवेसया संखेज्जगुणा । एवं सव्वणेरइय-देव-भवणादि जाव सहस्सारे त्ति ।

तिरिक्खेसु पंचपवेसया थोवा । छप्पवेसया असंखेज्जगुणा । उवरि ओघं । एवं पंचिदियतिरिक्खतिगस्स । णवरि दसपवेसया असंखेज्जगुणा । पंचिदियतिरिक्ख-मणुसअपज्जत्तएसु दसपवेसया थोवा, णवपवेसया संखेज्जगुणा, अट्ठपवेसया संखेज्ज-गुणा । मणुस्सेसु एक्किस्से पवेसया थोवा, दोण्णं पवेसया संखेज्जगुणा, चदुण्णं पवेसया संखेज्जगुणा, पंचण्णं पवेसया संखेज्जगुणा, छण्णं पवेसया संखेज्जगुणा, सत्तण्णं पवे-सया संखेज्जगुणा, दसण्णं पवेसया असंखेज्जगुणा, णवण्णं पवेसया संखेज्जगुणा, अट्ठण्णं पवेसया संखेज्जगुणा । एवं मणुस पज्जत्त-मणुसिणीसु । णवरि जम्हि असंखेज्जगुणं तम्हि संखेज्जगुणं कायव्वं । आणदादि जाव णवगेवज्ज त्ति दसण्णं पवेसया थोवा, छप्पेवसया संखेज्जगुणा, णवपवेसया संखेज्जगुणा, अट्ठपवेसया संखेज्जगुणा, सत्त-पवेसया संखेज्जगुणा । एवमणुद्दिसादि जाव सव्वट्ठे त्ति । णवरि दसपवेसया णत्थि ।

आउअस्स ट्ठाणदीरणा णत्थि । णिरयगईए णामस्स✿ एक्कवीस पंचवीस सत्तावीस

नौ प्रकृतिक स्थानके उदीरक संख्यातगुणे हैं । आठ प्रकृतिक स्थानके उदीरक संख्यातगुणे हैं । इसी प्रकारसे सब नारक, सामान्य देव और भवनवासियोंसे लेकर सहस्रार स्वर्ग तकके देवोंके विषयमें अल्पबहुत्वका कथन करना चाहिये ।

तिर्यंचोंमें पांच प्रकृतिक स्थानके उदीरक स्तोक हैं । छह प्रकृतिक स्थानके उदीरक असंख्यातगुणे हैं । आगे ओघके समान कथन करना चाहिये । इसी प्रकारसे पंचेन्द्रिय तिर्यंच आदि तीनके सम्बन्धमें कहना चाहिये । विशेष इतना है कि इनमें दस प्रकृतिक स्थानके उदीरक असंख्यातगुणे हैं । पंचेन्द्रिय तिर्यंच अपर्याप्तकों और मनुष्य अपर्याप्तकोंमें दस प्रकृतिक स्थानके उदीरक स्तोक, नौके उदीरक संख्यातगुणे तथा आठके उदीरक संख्यातगुणे हैं । मनुष्योंमें एक प्रकृतिक स्थानके उदीरक स्तोक, दोके उदीरक संख्यातगुणे, (चारके उदीरक संख्यातगुणे,) पांचके उदीरक संख्यातगुणे, छहके उदीरक संख्यातगुणे, सातके उदीरक संख्यातगुणे, दसके उदीरक असंख्यातगुणे, नौके उदीरक संख्यातगुणे, तथा आठके उदीरक संख्यातगुणे हैं । इसी प्रकार मनुष्य पर्याप्त और मनुष्यनियोंके विषयमें कथन करना चाहिये । विशेष इतना है कि जहां मनुष्योंमें असंख्यातगुणा कहा गया है वहां इनमें संख्यातगुणा कहना चाहिये । आनत स्वर्गको आदि लेकर नौ ग्रैवेयक पर्यंत देवोंमें दस प्रकृतिक स्थानके उदीरक स्तोक, छहके उदीरक संख्यातगुणे, नौके उदीरक संख्यातगुणे, आठके उदीरक संख्यातगुणे और सातके उदी-रक संख्यातगुणे हैं । इसी प्रकार अनुदिशोंसे लेकर सर्वार्थसिद्धि विमान तक कथन करना चाहिये । विशेष इतना है कि यहां दसके उदीरक नहीं हैं ।

आयु कर्मकी स्थानउदीरणा नहीं है । नरकगतिमें नामकर्मके इक्कीस, पच्चीस, सत्ताईस

✿ काप्रतौ 'णिरयगईणामस्स' इति पाठः ।

अट्ठावीस एगुणतीसं ति पंच उदीरणट्ठाणाणि होंति । २१।२५।२७।२८।२९। । तत्थ इगिवीसपयडिउदीरणट्ठाणं वुच्चदे । तं जहा– णिरयगइ-पंचिंदियजादि-तेजा-कम्मइय-सरीर-वण्ण-गंध-रस-फास-णिरयगइपाओग्गाणुपुव्वी-अगुरुअलहुअ- तस-बादर-पज्जत्त–थिराथिर-सुभासुभ-दूभग-अणादेज्ज-अजसगित्ति-णिमिणाणि त्ति एदाओ पयडीओ घेत्तूण एक्कवीसाए ट्ठाणं होदि । एदस्स ट्ठाणस्स को सामी ? विग्गहगदीए वट्टमाणो णेरइयो सम्माइट्ठी मिच्छाइट्ठी वा । एदस्स कालो जहण्णेण एगसमओ, उक्कस्सेण बे समया ।

आणुपुव्वीमवणेदूण वेउव्वियसरीर-हुंडसंठाण-वेउव्वियसरीरअंगोवंग-उवघाद-पत्तेयसरीरेसु पुव्वुत्तपयडीसु पक्खित्तेसु पणुवीसाए उदीरणट्ठाणं होदि । तं कस्स ? सरीरगहिदणेरइयस्स । तं केवचिरं कालादो होदि ? सरीरगहिदपढमसमयमादिं कादूण जाव सरीरपज्जत्तीए अणिल्लेविदचरिमसमओ त्ति, अंतोमुहुत्तमिदि वुत्तं होदि ।

परघाद-अप्पसत्थ✱विहायगदीसु पुव्विल्लपणुवीसपयडीसु पक्खित्तासु सत्ता-वीसपयडीणमुदीरणट्ठाणं होदि । तं केवचिरं कालादो होदि ? सरीरपज्जत्तीए पज्जत्तयदपढमसमयमादिं कादूण जाव आणपाणपज्जत्तीए अणिल्लेविदचरिमसमओ त्ति । एसो वि कालो जहण्णुक्कस्सेण अंतोमुहुत्तमेत्तो ।

अट्ठाईस और उनतीस प्रकृतियोंके पांच (२१, २५, २७, २८, २९) उदीरणास्थान होते हैं। उनमें इक्कीस प्रकृतियोंके उदीरणास्थानकी प्ररूपणा करते हैं। यथा– नरकगति, पंचेन्द्रिय जाति, तैजस व कार्मण शरीर, वर्ण, गन्ध, रस, स्पर्श, नरकगतिप्रायोग्यानुपूर्वी, अगुरुलघु, त्रस, बादर, पर्याप्त, स्थिर, अस्थिर, शुभ, अशुभ, दुर्भग, अनादेय, अयशकीर्ति और निर्माण; इन प्रकृतियोंको ग्रहण कर इक्कीस प्रकृतियोंका उदीरणास्थान होता है।

शंका–– इस स्थानका स्वामी कौन है ?

समाधान–– विग्रहगतिमें वर्तमान सम्यग्दृष्टि और मिथ्यादृष्टि नारक जीव उक्त स्थानका स्वामी है।

इसका काल जघन्यसे एक समय और उत्कर्षसे दो समय है। पूर्वोक्त प्रकृतियोंमेंसे आनुपूर्वीको कम करके वैक्रियिकशरीर, हुण्डकसंस्थान, वैक्रियिकशरीरांगोपांग, उपघात और प्रत्येकशरीर, इन पांच प्रकृतियोंको मिला देनेपर पच्चीस प्रकृतियोंका उदीरणास्थान होता है। वह किसके होता है ? वह जिसने शरीर ग्रहण कर लिया है ऐसे नारक जीवके होता है। वह कितने काल तक होता है ? शरीर ग्रहण करनेके प्रथम समयको आदि करके शरीरपर्याप्तिके पूर्ण होनेके उपान्त्य समय तक होता है। अभिप्राय यह कि वह अन्तमुहूर्त काल तक रहता है।

पूर्वोक्त पच्चीस प्रकृतियोंमें परघात और अप्रशस्त विहायोगति इन दो प्रकृतियोंको मिला देनेपर सत्ताईस प्रकृतियोंका उदीरणास्थान होता है। वह कितने काल रहता है ? वह शरीरपर्याप्तिसे पर्याप्त होनेके प्रथम समयको आदि लेकर आनप्राण पर्याप्तिके पूर्ण होनेके उपान्त्य समय तक होता है। यह भी काल जघन्य व उत्कर्षसे अन्तर्मुहूर्त मात्र है।

✱ काप्रतौ 'परघादपसत्थ-', ताप्रतौ 'परघाद- (अ-) पसत्थ-' इति पाठः ।

पुव्विल्लसत्तावीसपयडीसु उस्सासे पक्खित्ते अट्ठावीसपयडीणं उदीरणट्ठाणं होदि। तं केवचिरं कालादो होदि? आणपाणपज्जत्तीए पज्जत्तयदपढमसमयमादिं कादूण जाव भासापज्जत्तीए अणिल्लेविदचरिमसमओ त्ति। एसो वि कालो जहण्णुक्कस्सेण अंतोमुहुत्तमेत्तो।

पुव्विल्लअट्ठावीसपयडीसु दुस्सरे पक्खित्ते एगुणतीसपयडीणमुदीरणट्ठाणं होदि। एदस्स अद्धाणं भासापज्जत्तीए पज्जत्तयदस्स पढमसमयमादिं कादूण जाव अप्पप्पणो आउट्ठिदीए चरिमसमओ त्ति। तस्स कालो जहण्णेण दसवस्ससहस्साणि अंतोमुहुत्तूणाणि, उक्कस्सेण अंतोमुहुत्तूणतेत्तीसं सागरोवमाणि।

तिरिक्खगदीए एक्कवीस-चउवीस-पंचवीस-छव्वीस-सत्तावीस-अट्ठावीस-एगूणतीस-तीस-एक्कत्तीसं ति णव उदीरणट्ठाणाणि। तत्थ एइंदियाणमेक्कवीस-चउवीस-पंचवीस-छव्वीस-सत्तावीसं ति पंच उदीरणट्ठाणाणि। आदावुज्जोवाणमणुदएण एइंदियस्स सत्तावीसट्ठाणेण विणा चत्तारि उदीरणट्ठाणाणि। आदावुज्जोवुदएण सहिदए इंदियस्सपणुवीसट्ठाणेण विणा चत्तारि उदीरणट्ठाणाणि। तत्थ आदावुज्जोवुदयविरहिदएइंदियस्स भण्णमाणे तिरिक्खगइ-एइंदियजादि-तेजा-कम्मइयसरीर-वण्ण-गंध-रस-फास-तिरिक्खगइपाओग्गाणुपुव्वी--अगुरुअलहुअ-थावर-बादर-सुहुमाणमेक्कदरं पज्जत्तापज्जत्ताणमेक्कदरं थिराथिरं सुभासुभं दूभगं अणादेज्जं जस-अजसकित्तीणमेक्कदरं णिमिणमेदाहि

पूर्वोक्त सत्ताईस प्रकृतियोंमें उच्छ्वासके मिला देनेपर अट्ठाईस प्रकृतियोंका उदीरणास्थान होता है। वह कितने काल तक रहता है? आनप्राणपर्याप्तिसे पर्याप्त होनेके प्रथम समयको आदि करके भाषापर्याप्तिके पूर्ण होनेके उपान्त्य समय तक रहता है। यह भी काल जघन्य व उत्कर्षसे अन्तर्मुहूर्त मात्र है।

पूर्वोक्त अट्ठाईस प्रकृतियोंमें दुस्वरके मिला देनेपर उनतीस प्रकृतियोंका उदीरणास्थान होता है। इसका अध्वान भाषापर्याप्तिसे पर्याप्त होनेके प्रथम समयको आदि करके अपनी अपनी आयु:स्थितिके अन्तिम समय तक है। उसका काल जघन्यसे अन्तर्मुहूर्त कम दस हजार वर्ष और उत्कर्षसे अन्तर्मुहूर्त कम तेतीस सागरोपम प्रमाण है।

तिर्यग्गतिमें इक्कीस, चौबीस, पच्चीस, छब्बीस, सत्ताईस अट्ठाईस, उनतीस, तीस और इकतीस प्रकृतियोंके नौ उदीरणास्थान हैं। उनमें एकेन्द्रिय जीवोंके इक्कीस, चौबीस, पच्चीस, छब्बीस और सत्ताईस प्रकृतियोंके पांच उदीरणास्थान सम्भव हैं। उनमेंसे आतप व उद्योतके उदयसे रहित एकेन्द्रिय जीवके सत्ताईसके विना चार उदीरणास्थान होते हैं। आतप व उद्योतके सहित एकेन्द्रिय जीवके पच्चीस प्रकृति रूप स्थानके विना चार उदीरणास्थान होते हैं। उनमें आतप व उद्योतके उदयसे रहित एकेन्द्रिय जीवके उक्त चार स्थानोंका कथन करनेपर तिर्यग्गति, एकेन्द्रिय जाति, तैजस व कार्मण शरीर, वर्ण, गन्ध, रस, स्पर्श, तिर्यग्गतिप्रायोग्यानुपूर्वी, अगुरुलघु, स्थावर, बादर व सूक्ष्ममेंसे एक, पर्याप्त व अपर्याप्तमेंसे एक, स्थिर, अस्थिर, शुभ, अशुभ, दुर्भग, अनादेय, यशकीर्ति और अयशकीर्तिमेंसे एक तथा निर्माण, इन इक्कीस

एक्कवीसपयडीहि एगमुदीरणाट्ठाणं होदि। तं कत्थ? विग्गहगदीए वट्टमाणएइंदियम्मि होदि। तं केवचिरं? जहण्णेण एगसमओ, उक्कस्सेण तिण्णि समया। पुव्विल्लएक्कवीसपयडीसु आणुपुव्वीमवणेदूण ओरालियसरीर-हुंडसंठाण-उवघाद-पत्तेय-साहारणसरीराणमेक्कदरे पक्खित्ते चउवीसाए उदीरणट्ठाणं होदि। तं कत्थं? गहिदसरीरपढमसमयप्पहुडि जाव सरीरपज्जत्तीए अणिल्लेविदचरिमसमओ त्ति एदम्मि अद्धाणे✿। तं केवचिरं? जहण्णुक्कस्सेण अंतोमुहुत्तं। पुणो अपज्जत्तमवणिय सेसचउवीसपयडीसु परघादे पक्खित्ते पंचवीसपयडीणमुदीरणट्ठाणं होदि। तं कत्थ? सरीरपज्जत्तीए पज्जत्तयदपढमसमयमादिं कादूण जाव आणपाणपज्जत्तीए अणिल्लेविदचरिमसमओ त्ति। तं केवचिरं? जहण्णुक्कस्सेण अंतोमुहुत्तं। तस्सेव आणपाणपज्जत्तीए पज्जत्तयदस्स पुव्विल्लपंचवीसपयडीसु उस्सासे पक्खित्ते छव्वीसपयडीणमुदीरणट्ठाणं होदि। तं कस्स? आणपाणपज्जत्तीए पज्जत्तयदस्स। तं केवचिरं? जहण्णेण अंतोमुहुत्तं, उक्कस्सेण अंतोमुहुत्तूणबावीसवस्ससहस्साणि।

आदावुज्जोवुदयसहिदएइंदियस्स वुच्चदे– एक्कवीस-चउवीसउदीरणट्ठाणाणं पुव्वं व परूवणा कायव्वा। पुणो सरीरपज्जत्तीए पज्जत्तयदस्स परघाद-आदावुज्जोवाणमेक्कदरे

प्रकृतियोंका एक उदीरणास्थान होता है। वह कहांपर होता है? वह विग्रहगतिमें वर्तमान एकेन्द्रिय जीवके होता है। वह कितने काल तक होता है? वह जघन्यसे एक समय और उत्कर्षसे तीन समय तक होता है।

पूर्वोक्त इक्कीस प्रकृतियोंमेंसे आनुपूर्वीको कम करके औदारिकशरीर, हुंण्डसंस्थान, उपघात तथा प्रत्येक व साधारण शरीरमेंसे एक, इन चार प्रकृतियोंको मिला देनेपर चौबीस प्रकृतियोंका उदीरणास्थान होता है। वह कहांपर होता है? वह शरीर ग्रहण करनेके प्रथम समयसे लेकर शरीरपर्याप्तिके पूर्ण होनेके उपान्त्य समय तक, इस अध्वानमें होता है। वह कितने काल तक होता है? वह जघन्य व उत्कर्षसे अन्तर्मुहूर्त काल तक होता है।

फिर इनमेंसे अपर्याप्तको कम करके शेष चौबीस प्रकृतियोंमें परघातको मिला देनेपर पच्चीस प्रकृतियोंका उदीरणास्थान होता है। वह कहांपर होता है? वह शरीरपर्याप्तिसे पर्याप्त होनेके प्रथम समयको आदि करके आनप्राणपर्याप्तिके पूर्ण होनेके उपान्त्य समय तक होता है। वह कितने काल तक होता है? वह जघन्य व उत्कर्षसे अन्तर्मुहूर्त काल तक होता है। आनप्राणपर्याप्तिसे पर्याप्त हुए उक्त एकेन्द्रिय जीवकी पूर्वोक्त पच्चीस प्रकृतियोंमें उच्छ्वासके मिला देनेपर छब्बीस प्रकृतियोंका उदीरणास्थान होता है। वह किसके होता है? वह आन-प्राणपर्याप्तिसे पर्याप्त हुए एकेन्द्रिय जीवके होता है। वह कितने काल तक होता है? वह जघन्यसे अन्तर्मुहूर्त और उत्कर्षसे अन्तर्मुहूर्त कम बाईस हजार वर्ष तक होता है।

अब आतप व उद्योतके उदयसे सहित एकेन्द्रिय जीवके उदीरणास्थानोंका कथन करते हैं– इक्कीस और चौबीस प्रकृति रूप स्थानोंकी प्ररूपणा पहिलेके ही समान करना चाहिये। पुनः शरीरपर्याप्तिसे पर्याप्त हुए जीवकी पूर्वोक्त चौबीस प्रकृतियोंमें परघात और आतप-उद्योतमेंसे

✿ काप्रतौ 'अद्धाणं' इति पाठः।

च पुव्विल्लचदुवीसपयडीसु पक्खित्तेसु पणुवीसट्ठाणमुल्लंघिय छव्वीसपयडिट्ठाणमुप्पज्जदि। तं कस्स ? सरीरपज्जत्तीए पज्जत्तयदस्स। तं केवचिरं ? जहण्णुक्कस्सेण अंतोमुहुत्तं। तस्सेव आणपाणपज्जत्तीए पज्जत्तयदस्स छव्वीसपयडीसु उस्सासे पक्खित्ते सत्तावीसपयडीणमुदीरणट्ठाणं होदि।

विगलिंदियाणं सामण्णेण एक्कवीस-छव्वीस-अट्ठावीस-एगूणतीस-तीस-एक्कत्तीसं ति छउदीरणट्ठाणाणि। उज्जोवउदयविरहिदविगलिंदियाणं पंच उदीरणट्ठाणाणि, एक्कत्तीसउदीरणट्ठाणाभावादो। उज्जोवुदयसंजुत्तविगिलिंदियस्स वि पंचेवुदीरणट्ठाणाणि, परघादुज्जोव-अप्पसत्थविहायगदीणमक्कमपवेसेण अट्ठावीसट्ठाणाणुप्पत्तीदो।

उज्जोवुदयविरहिदबेइंदियस्स ताव उच्चदे। तं जहा– तिरिक्खगइ-बेइंदियजादि तेजा-कम्मइयसरीर वण्ण-गंध-रस-फास-तिरिक्खगइपाओग्गाणुपुव्वी-अगुरुअलहुअ-तस-बादर पज्जत्तापज्जत्ताणमेक्कदरं थिराथिर-सुभासुभ-दूभग-अणादेज्ज जस-अजसगित्तीणमेक्कदरं णिमिणणामं च एदासिमेक्कवीसपयडीणमेगं ट्ठाणं। तं कस्स ? बेइंदियस्स विग्गहगदीए वट्टमाणस्स। तं केवचिरं ? जहण्णेण एगसमओ, उक्कस्सेण बे समया। एदासु एक्कवीसपयडीसु आणुपुव्वीमवणेदूण गहिदसरीरपढमसमए ओरालियसरीर-

---

किसी एकके मिलानेपर पच्चीस प्रकृतिक स्थानका उल्लंघन करके छब्बीस प्रकृतियोंका स्थान उत्पन्न होता है। वह किसके होता है ? वह शरीरपर्याप्तिसे पर्याप्त हुए जीवके होता है। वह कितने काल तक रहता है ? वह जघन्य और उत्कर्षसे अन्तर्मुहूर्त तक रहता है। आन-प्राणपर्याप्तिसे पर्याप्त हुए उक्त जीवकी छब्बीस प्रकृतियोंमें उच्छ्वासके मिला देनेपर सत्ताईस प्रकृतियोंका उदीरणास्थान होता है।

विकलेन्द्रिय जीवोंके सामान्यसे इक्कीस, छब्बीस, अट्ठाईस, उनतीस, तीस, और इकतीस प्रकृति रूप ये छह उदीरणास्थान होते हैं। परन्तु उद्योतके उदयसे रहित विकलेन्द्रिय जीवोंके पांच उदीरणास्थान होते हैं, क्योंकि, उनके इकतीस प्रकृति रूप उदीरणास्थान नहीं होता। उद्योतके उदयसे संयुक्त विकलेन्द्रियके भी पांच ही उदीरणास्थान होते हैं, क्योंकि, उनके परघात, उद्योत और अप्रशस्त विहायोगति इन तीन प्रकृतियोंका युगपत् प्रवेश होनेसे अट्ठाईस प्रकृतियोंका स्थान उत्पन्न नहीं होता।

उद्योतके उदयसे रहित द्वीन्द्रिय जीवके उदीरणास्थानोंका कथन करते हैं। यथा– (तिर्यग्गति,) द्वीन्द्रियजाति, तैजस व कार्मण शरीर, वर्ण, गन्ध, रस, स्पर्श, तिर्यग्गतिप्रायोग्यानुपूर्वी अगुरुलघु, त्रस, बादर, पर्याप्त व अपर्याप्तमेंसे एक, स्थिर, अस्थिर, शुभ, अशुभ, दुर्भग, अनादेय; यशकीर्ति और अयशकीर्तिमेंसे एक तथा निर्माण नामकर्म; इन इक्कीस प्रकृतियोंका एक स्थान होता है। वह किसके होता है ? वह विग्रहगतिमें वर्तमान द्वीन्द्रिय जीवके होता है। वह कितने काल तक रहता है ? वह जघन्यसे एक समय और उत्कर्षसे दो समय रहता है। इन इक्कीस प्रकृतियोंमेंसे आनुपूर्वीको कम करके शरीर ग्रहण करनेके प्रथम समयमें औदारिकशरीर,

हुंडसंठाण-ओरालियसरीरंगोवंग-असंपत्तसेवट्टसंघडण-उवघाद-पत्तेयसरीरेसु पक्खित्तेसु छव्वीसाए ट्ठाणं होदि। तं कस्स ? बेइंदियस्स सरीरपज्जत्तीए अपज्जत्तयदस्स*। तं केवचिरं ? जहण्णुक्कस्सेण अंतोमुहुत्तं। सरीरपज्जत्तीए पज्जत्तयदस्स पुव्वुत्तपयडीसु अपज्जत्तमवणिय परघाद-अप्पसत्थविहायगदीसु पक्खित्तासु अट्ठावीसाए ट्ठाणं होदि। आणापाणपज्जत्तीए पज्जत्तयदस्स पुव्वुत्तपयडीसु उस्सासे पक्खित्ते एगुणतीसट्ठाणं होदि। भासापज्जत्तीए पज्जत्तयदस्स पुव्वुत्तपयडीसु दुस्सरे पक्खित्ते तीसाए ट्ठाणं होदि।

संपहि उज्जोवुदयसंजुत्तबेइंदियस्स भण्णमाणे एक्कवीस-छव्वीसाओ जधा पुव्वं वुत्ताओ तधा वत्तव्वाओ। पुणो छव्वीसाए उवरि परघादुज्जोव-अप्पसत्थविहायगदीसु पक्खित्तासु एगुणतीसाए ट्ठाणं होदि। आणापाणपज्जत्तीए पज्जत्तयदस्स उस्सासे पक्खित्ते तीसाए ट्ठाणं होदि। भासापज्जत्तीए पज्जत्तयदस्स दुस्सरे पक्खित्ते एक्कतीसाए ट्ठाणं होदि। एदस्स कालो जहण्णेण अंतोमुहुत्तं, उक्कस्सेण अंतोमुहुत्तूणबारसवासाणि। एवं तेइंदिय-चउरिंदियाणं पि वत्तव्वं। णवरि तीसेक्कत्तीसाणं कालो जहाकमेण एगुणवण्णरादिंदियाणि छम्मासा अंतोमुहुत्तूणा।

हुण्डकसंस्थान, औदारिकशरीरांगोपांग, असंप्राप्तासृपाटिकासंहनन, उपघात और प्रत्येकशरीर; इन छह प्रकृतियोंको मिला देनेपर छब्बीस प्रकृतिक स्थान होता है। वह किसके होता है? वह शरीरपर्याप्तिसे पर्याप्त न हुए द्वीन्द्रिय जीवके होता है। वह कितने काल रहता है ? वह जघन्य व उत्कर्षसे अन्तर्मुहूर्त रहता है। शरीरपर्याप्तिसे पर्याप्त हुए द्वीन्द्रिय जीवकी पूर्वोक्त प्रकृतियोंमेंसे अपर्याप्तको कम करके अर्थात् पर्याप्तके साथ परघात और अप्रशस्त विहायोगतिको मिला देनेपर अट्ठाईस प्रकृति रूप स्थान होता है। आनप्राणपर्याप्तिसे पर्याप्त हुए उक्त जीवकी पूर्वोक्त प्रकृतियोंमें उच्छ्वासके मिला देनेपर उनतीस प्रकृति रूप स्थान होता है। भाषापर्याप्तिसे पर्याप्त हुए उक्त जीवकी पूर्वोक्त प्रकृतियोंमें दुस्वरको मिला देनेपर तीस प्रकृति रूप स्थान होता है।

अब उद्योतके उदयसे संयुक्त द्वीन्द्रिय जीवके स्थानोंका कथन करते समय इक्कीस और छब्बीस प्रकृति रूप स्थानोंकी प्ररूपणा जैसे पहिले की गई है वैसे ही करना चाहिये। पुनः छब्बीस प्रकृति रूप स्थानके ऊपर परघात, उद्योत और अप्रशस्त विहायोगति इन तीन प्रकृतियोंको मिला देनेपर उनतीस प्रकृति रूप स्थान होता है। आनप्राणपर्याप्तिसे पर्याप्त हुए जीवके एक उच्छ्वास प्रकृतिके मिला देनेपर तीस प्रकृति रूप स्थान होता है। भाषापर्याप्तिसे पर्याप्त हुए उक्त जीवके दुस्वर प्रकृतिके मिला देनेपर इकतीस प्रकृति रूप स्थान होता है। इसका काल जघन्यसे अन्तर्मुहूर्त और उत्कर्षसे अन्तर्मुहूर्त कम बारह वर्ष प्रमाण है। इसी प्रकार त्रीन्द्रिय और चतुरिन्द्रिय जीवोंके भी स्थानोंका कथन करना चाहिये। विशेष इतना है कि तीस और इकतीस प्रकृति रूप स्थानोंका काल यथाक्रमसे अन्तर्मुहूर्त कम उनंचास रात्रि-दिवस और अन्तर्मुहूर्त कम छह मास प्रमाण है।

---

* काप्रतौ 'पज्जत्तयदस्स', ताप्रतौ '(अ-) पज्जत्तयदस्स' इति पाठः।

पंचिंदियतिरिक्खस्स सामण्णेण एक्कवीस-छव्वीस-अट्ठावीस-एगुणतीस-तीस-एक्कत्तीस-ति छउदीरणट्ठाणाणि। उज्जोवुदयविरहिदपंचिंदियतिरिक्खस्स पंच उदीरणट्ठाणाणि। कुदो? तत्थ एक्कत्तीसाए उदयाभावादो। उज्जोवुदयसंजुत्तपंचिंदियतिरिक्खस्स वि पंचेवुदीरणट्ठाणाणि। कुदो ? तत्थ अट्ठावीसट्ठाणाभावादो। उज्जोवुदयविरहिदपंचिंदियतिरिक्खस्स भण्णमाणे तत्थ इदमेक्कवीसाएट्ठाणं❋– तिरिक्खगइ-पंचिंदियजादि–तेजा–कम्मइयसरीर–वण्ण-गंध-रस–फास–तिरिक्खगइपाओग्गाणुपुव्वी-अगुरुअलहुअ-तस-बादर-पज्जत्तापज्जत्ताणमेक्कदरं थिराथिर–सुभासुभ-सुभग–दुभगाणमेक्कदरं आदेज्ज-अणादेज्जाणमेक्कदरं जसकित्ति-अजसकित्तीणमेक्कदरं णिमिणणामं च, एदासिमेक्कवीसपयडीणमेक्कं चेव ट्ठाणं। सरीरे गहिदे आणुपुव्वीमवणिय ओरालियसरीरं छण्णं संठाणाणमेक्कदरं ओरालियसरीरअंगोवंगं छण्णं संघडणाणमेक्कदरं उवघादं पत्तेयसरीरमिदि छसु पयडीसु पक्खित्तासु✿ छव्वीसाए ट्ठाणं होदि। सरीरपज्जत्तीए पज्जत्तयदस्स अपज्जत्तमवणिय परघादे▣ दोण्णं विहायगदीणमेक्कदरे च पक्खित्ते अट्ठावीसाए ट्ठाणं होदि। आणपाणपज्जत्तीए पज्जत्तयदस्स उस्सासे पक्खित्ते एगुणतीसाए ट्ठाणं होदि। भासापज्जत्तीए पज्जत्तयदस्स सुस्सर-दुस्सरेसु एक्कदरे पक्खित्ते तीसाए ट्ठाणं होदि। एदिस्से तीसाए कालो जहण्णेण अंतोमुहुत्तं,

पंचेन्द्रिय तिर्यंचके सामान्यसे इक्कीस, छब्बीस, अट्ठाईस, उनतीस, तीस, और इकतीस प्रकृति रूप छह उदीरणास्थान होते हैं। उद्योतके उदयसे रहित पंचेन्द्रिय तिर्यंचके पांच उदीरणास्थान होते हैं, क्योंकि, उसके इकतीस प्रकृतिरूप उदीरणास्थानकी सम्भावना नहीं है। उद्योतके उदयसे संयुक्त पंचेन्द्रिय तिर्यंचके भी पांच ही उदीरणास्थान होते हैं, क्योंकि, वहां अट्ठाईस प्रकृति रूप स्थानकी सम्भावना नहीं है। उद्योतके उदयसे रहित पंचेन्द्रिय तिर्यंचके स्थानोंकी प्ररूपणा करते समय उनमें इक्कीस प्रकृति रूप स्थान यह है– तिर्यग्गति, पंचेन्द्रियजाति, तैजस व कार्मण शरीर, वर्ण, गन्ध, रस, स्पर्श, तिर्यग्गतिप्रायोग्यानुपूर्वी, अगुरुलघु, त्रस, बादर, पर्याप्त व अपर्याप्तमेंसे एक, स्थिर, अस्थिर, शुभ, अशुभ, सुभग और दुर्भगमेंसे एक, आदेय व अनादेयमेंसे एक, यशकीर्ति और अयशकीर्तिमेंसे एक तथा निर्माण नामकर्म; इन इक्कीस प्रकृतियोंका एक ही स्थान होता है। शरीरके ग्रहण कर लेनेपर आनुपूर्वीको कम करके औदारिकशरीर, छह संस्थानोंमेंसे एक, औदारिकशरीरांगोपांग, छह संहननोंमेंसे एक, उपघात और प्रत्येकशरीर, इन छह प्रकृतियोंको मिला देनेपर छब्बीस प्रकृतियोंका स्थान होता है। शरीर–पर्याप्तिसे पर्याप्त हुए उक्त जीवकी उन छब्बीस प्रकृतियोंमेंसे अपर्याप्तको कम करके अर्थात् पर्याप्तके साथ परघात और दो विहायोगतिमेंसे एक, इन दो प्रकृतियोंको मिला देनेपर अट्ठाईस प्रकृतियोंका स्थान होता है। उक्त जीवके आनप्राणपर्याप्तिसे पर्याप्त हो जानेपर उक्त प्रकृतियोंमें उच्छ्वासके मिला देनेपर उनतीस प्रकृतियोंका स्थान होता है। भाषापर्याप्तिसे पर्याप्त होनेपर उपर्युक्त प्रकृतियोंमें सुस्वर और दुस्वरमेंसे किसी एकको मिला देनेपर तीस प्रकृतियोंका स्थान

❋ काप्रतौ 'इदमेक्कवीसट्ठागाणं' इति पाठः। ✿ काप्रतौ 'पक्खित्ता' इति पाठः।
▣ ताप्रतौ 'परघाद' इति पाठः।

उक्कस्सेण अंतोमुहुत्तूणतिण्णिपलिदोवमाणि ।

उज्जोवुदयसंजुत्तपंचिंदियतिरिक्खस्स एक्कवीस-छव्वीसउदीरणट्ठाणाणि पुव्वं व वत्तव्वाणि। पुणो सरीरपज्जत्तीए पज्जत्तयदस्स परघादुज्जोवेसु पसत्थापसत्थविहायगदीणमेक्कदरे च पविट्ठेसु एगूणतीसाए ट्ठाणं होदि । आणापाणपज्जत्तीए पज्जत्तयदस्स उस्सासे पक्खित्ते तीसाए ट्ठाणं होदि । भासापज्जत्तीए पज्जत्तयदस्स सुस्सर-दुस्सराणमेक्कदरे पविट्ठे एक्कत्तीसाए ट्ठाणं होदि । एदस्स ठाणस्स कालो जहण्णेण अंतोमुहुत्तं, उक्कस्सेण अंतोमुहुत्तूणतिण्णिपलिदोवमाणि ।

मणुस्साणं सामण्णेण वीसेक्कवीस--पंचवीस-छव्वीस-सत्तावीस--अट्ठावीस-एगुणतीस-तीस-एक्कत्तीस इदि णव उदीरणट्ठाणाणि । सामण्णमणुस्सा विसेसमणुस्सा विसेसविसेसमणुस्सा चेदि तिविहा मणुस्सा होंति । तत्थ सामण्णमणुस्साणं वुच्चदे । तं जहा– मणुसगइ-पंचिंदियजादि-तेजा-कम्मइयसरीर-वण्ण-गंध--रस-फास-मणुसगइपाओग्गाणुपुव्वी-अगुरुअलहुअ-तस-बादर पज्जत्तापज्जत्ताणमेक्कदरं थिराथिर-सुहासुह सुभग-दुभगाणमेक्कदरं आदेज्ज-अणादेज्जाणमेक्कदरं जसकित्ति--अजसकित्तीणमेक्कदरं णिमिणणामं चेदि एदासिं पयडीणमेक्कमुदीरणट्ठाणं । गहिदसरीरस्स✵ मणुसगइपाओग्गाणुपुव्वीमवणेदूण ओरालिय---

---

होता है । तीस प्रकृति रूप इस स्थानका काल जघन्यसे अन्तर्मुहूर्त और उत्कर्षसे अन्तर्मुहूत कम तीन पल्योपम प्रमाण है ।

उद्योतके उदयसे संयुक्त पंचेन्द्रिय तिर्यंचके इक्कीस और छब्बीस प्रकृति रूप स्थानोंका कथन पहिलेके समान ही करना चाहिये । पुनः शरीरपर्याप्तिसे पर्याप्त हुए पंचेन्द्रिय तिर्यंचकी उक्त छब्बीस प्रकृतियोंमें परघात, उद्योत और प्रशस्त व अप्रशस्त विहायोगतियोंमेंसे एक, इन तीन प्रकृतियोंके प्रविष्ट होनेपर उनतीस प्रकृतियोंका स्थान होता है । आनप्राणपर्याप्तिसे पर्याप्त हो जानेपर उनमें एक उच्छ्वासके मिला देनेसे तीस प्रकृतिरूप स्थान होता है । भाषापर्याप्तिसे पर्याप्त हो जानेपर सुस्वर और दुस्वरमेंसे किसी एक प्रकृतिके उपर्युक्त प्रकृतियोंमें प्रविष्ट होनेपर इकतीस प्रकृति रूप स्थान होता है । इस स्थानका काल जघन्यसे अन्तर्मुहूर्त और उत्कर्षसे अन्तर्मुहूर्त कम तीन पल्योपम प्रमाण है ।

मनुष्योंके सामान्यसे बीस, इक्कीस, पच्चीस, छब्बीस, सत्ताईस, अट्ठाईस, उनतीस, तीस और इकतीस; ये नौ उदीणास्थान होते हैं । सामान्य मनुष्य, विशेष मनुष्य और विशेषविशेष मनुष्य इस प्रकारसे मनुष्योंके तीन भेद हैं । उनमें सामान्य मनुष्योंके उदीरणास्थानोंका कथन करते हैं । यथा– मनुष्यगति, पंचेन्द्रिय जाति, तैजस व कार्मण शरीर, वर्ण, गन्ध, रस, स्पर्श, मनुष्यगतिप्रायोग्यानुपूर्वी, अगुरुलघु, त्रस, बादर, पर्याप्त व अपर्याप्तमेंसे एक, स्थिर, अस्थिर, शुभ, अशुभ, सुभग व दुर्भगमेंसे एक, आदेय व अनादेयमेंसे एक, यशकीर्ति व अयशकीर्तिमेंसे एक तथा निर्माण नामकर्म, इन प्रकृतियोंका एक उदीरणास्थान होता है । शरीरके ग्रहण कर लेनेपर मनुष्यगतिप्रायोग्यानुपूर्वीको कम करके औदारिकशरीर, छह संस्थानोंमेंसे एक, औदारिक–

✵ ताप्रतौ 'गहिदस्स सरीरस्स' इति पाठः ।

सरीरं छण्णं संठाणाममेक्कदरं ओरालियसरीरअंगोवंगं छण्णं संघडणाणमेक्कदरं उवघाद-पत्तेयसरीरं च घेत्तूण पक्खित्ते छव्वीसाए ट्ठाणं होदि। सरीरपज्जत्तीए पज्जत्तयदस्स अपज्जत्तमवणिय परघादं पसत्थापसत्थविहायगदीणमेक्कदरं च घेत्तूण पक्खित्ते अट्ठावीसाए ट्ठाणं होदि। आणापाणपज्जत्तीए पज्जत्तयदस्स उस्सासे पक्खित्ते एगुणतीसाए ट्ठाणं होदि। भासापज्जत्तीए पज्जत्तयदस्स सुस्सर-दुस्सराण-मेक्कदरे पक्खित्ते तीसाए ट्ठाणं होदि।

संपहि आहारसरीरोदइल्लाणं विसेसमणुस्साणं भण्णमाणे तेसिं पंचवीस-सत्तावीस-अट्ठावीस-एगुणतीसं चेदि चत्तारिउदीरणट्ठाणाणि। मणुसगइ-पंचिदियजादि-आहार-तेजा✱-कम्मइयसरीर-समचउरससंठाण--आहारसरीरअंगोवंग-वण्ण-गंध-रस--फास-अगुरुअलहुअ-उवघाद-तस--बादर-पज्जत्त-पत्तेयसरीर-थिराथिर-सुभासुभ-सुभग--आदेज्ज-जसगित्तिणिमिणं चेदि एदासिं पणुवीसपयडीणमेक्कमुदीरणट्ठाणं। सरीरपज्ज-त्तीए पज्जत्तयदस्स परघाद-पसत्थविहायगदीसु पक्खित्तासु सत्तावीसाए ट्ठाणं होदि। आणापाणपज्जत्तीए पज्जत्तयदस्स उस्सासे पक्खित्ते अट्ठावीसाए ट्ठाणं होदि। भासा-पज्जत्तीए पज्जत्तयदस्स सुस्सरे पक्खित्ते एगुणतीसाए ट्ठाणं होदि।

विसेसविसेसमणुस्साणं वीस-एक्कवीस-छव्वीस-सत्तावीस-अट्ठावीस-एगूणतीस-तीस-

---

शरीरांगोपांग, छह संहननोंमें एक, उपघात और प्रत्येकशरीर इन प्रकृतियोंको ग्रहण करके मिला देनेसे छब्बीस प्रकृतियोंका स्थान होता है। शरीरपर्याप्तिसे पर्याप्त हो जानेपर अपर्याप्तको कम करके परघात और प्रशस्त व अप्रशस्त विहायोगतियोंमेंसे एक, इन दो प्रकृतियोंको ग्रहण करके मिला देनेपर अट्ठाईस प्रकृति रूप स्थान होता है। आनप्राणपर्याप्तिसे पर्याप्त हो जानेपर उच्छ्वासके मिला देनेसे उनतीस प्रवृत्ति रूप स्थान होता है। भाषापर्याप्तिसे पर्याप्त होनेपर सुस्वर और दुस्वरमेंसे किसी एक प्रकृतिके मिला देनेसे तीस प्रकृतिरूप स्थान होता है।

अब आहारशरीरके उदयसे संयुक्त विशेष मनुष्योंके उदीरणास्थानोंका कथन करनेपर उनके पच्चीस, सत्ताईस, अट्ठाईस और उनतीस प्रकृति रूप चार उदीरणास्थान होते हैं। मनुष्य-गति, पंचेन्द्रिय जाति, आहारक, तैजस व कार्मण शरीर, समचतुरस्रसंस्थान, आहारकशरीरांगो-पांग, वर्ण, गन्ध, रस, स्पर्श, अगुरुलघु, उपघात, त्रस, बादर, पर्याप्त, प्रत्येकशरीर, स्थिर, अस्थिर, शुभ, अशुभ, सुभग, आदेय, यशकीर्ति और निर्माण नामकर्म; इन पच्चीस प्रकृतियोंका एक उदीरणास्थान होता है। शरीरपर्याप्तिसे पर्याप्त होनेपर उपर्युक्त प्रकृतियोंमें परघात और प्रशस्तविहायोगतिके मिला देनेसे सत्ताईस प्रकृति रूप स्थान होता है। आनप्राणपर्याप्तिसे पर्याप्त होनेपर उच्छ्वासके मिला देनेसे अट्ठाईस प्रकृति रूप स्थान होता है। भाषापर्याप्तिसे पर्याप्त होनेपर सुस्वरके मिला देनेसे उनतीस प्रकृति रूप स्थान होता है।

विशेषविशेष मनुष्योंके बीस, इक्कीस, छब्बीस, सत्ताईस, अट्ठाईस, उनतीस, तीस और

✱ काप्रतौ 'जादि-तेजा' इति पाठः।

एक्कत्तीसं चेदि अट्ठ उदीरणट्ठाणाणि। तं जहा– मणुसगइ-पंचिंदियजादि-तेजा-कम्मइयसरीर–वण्ण-गंध-रस-फास–अगुरुअलहुअ-तस-बादर–पज्जत्त–थिराथिर-सुभासुभ–सुभग-आदेज्ज-जसगित्ति-णिमिणं चेदि एदासिं वीसण्णं पयडीणमेगं चेव ट्ठाणं। तं कस्स? पदर-लोगपूरणगदसजोगिकेवलिस्स। जदि तित्थयरो तो तित्थयरेण सह एक्कवीसाए ट्ठाणं होदि। कवाडं गदस्स ओरालियसरीरं समचउरससंठाणं, तित्थयरुदयरहियाणं छण्णं संठाणाणमेक्कदरं, ओरालियसरीरंगोवंगं वज्जरिसहसंघडणं उवघादं पत्तेयसरीरं च वीसाए एक्कवीसाए वा पक्खित्ते छव्वीसाए सत्तावीसाए वा ट्ठाणं होदि। दंडं गदस्स परघादं पसत्थापसत्थविहायगदीणमेक्कदरं च घेत्तूण छव्वीसाए सत्तावीसाए च पक्खित्ते अट्ठावीसाए एगुणतीसाए वा ट्ठाणं होदि। णवरि तित्थयराणं पसत्थविहायगदी एक्का चेव उदेदि। आणापाणपज्जत्तीए पज्जत्तयदस्स उस्सासे पक्खित्ते एगुणतीसाए तीसाए च ट्ठाणं होदि। भासापज्जत्तीए पज्जत्तयदस्स सुस्सर-दुस्सरेसु एक्कदरे पविट्ठे तीसाए एक्कतीसाए वा ट्ठाणं होदि। णवरि तित्थयराणं दुस्सर-अप्पसत्थविहायगदी–णमुदओ णत्थि।

संपहि एक्कत्तीसंपयडीणं णामणिद्देसो कीरदे। तं जहा– मणुसगइ-पंचिदयजादि-ओरालिय-तेजा-कम्मइयसरीर-समचउरससंठाण--ओरालियसरीरंगोवंग-वज्जरिसहसंघडण–

इकतीस, ये आठ उदीरणास्थान होते हैं। यथा– मनुष्यगति, पंचेन्द्रियजाति, तैजस व कार्मण शरीर, वर्ण, गन्ध, रस, स्पर्श, अगुरुलघु, त्रस, बादर, पर्याप्त, स्थिर, अस्थिर, शुभ, अशुभ, सुभग, आदेय, यशकीर्ति और निर्माण; इन बीस प्रकृतियोंका एक स्थान होता है। वह किसके होता है। वह प्रतर व लोकपूरण समुद्घातगत सयोगकेवलीके होता है। वह यदि तीर्थंकर होता है तो तीर्थंकर प्रकृतिके साथ इक्कीस प्रकृति रूप स्थान होता है। कपाटसमुद्घातको प्राप्त केवलीके औदारिकशरीर, (यदि वह तीर्थंकर है तो) समचतुरस्रसंस्थान, तीर्थंकर प्रकृतिके उदयसे रहित केवलियोंके छह संस्थानोंमेंसे कोई एक, औदारिकशरीरांगोपांग, वज्रर्षभसंहनन, उपघात और प्रत्येकशरीर; इन छह प्रकृतियोंको बीस अथवा इक्कीस प्रकृति रूप स्थानमें मिला देनेपर छब्बीस अथवा सत्ताईस प्रकृति रूप स्थान होता है। दण्डसमुद्घातको प्राप्त केवलीकी अपेक्षा परघात और प्रशस्त व अप्रशस्त विहायोगतिमेंसे किसी एकको ग्रहण कर छब्बीस अथवा सत्ताईस प्रकृति रूप स्थानोंमें मिला देनेसे अट्ठाईस अथवा उनतीस प्रकृति रूप स्थान होते हैं। विशेष इतना है कि तीर्थंकरोंके एक प्रशस्त विहायोगतिका ही उदय होता है। आनप्राणपर्याप्तिसे पर्याप्त होनेपर उक्त दो स्थानोंमें एक उच्छ्वास प्रकृतिको मिला देनेसे क्रमशः उनतीस और तीस प्रकृति रूप स्थान होते हैं। भाषापर्याप्तिसे पर्याप्त होनेपर उक्त प्रकृतियोंमें सुस्वर व दुस्वरमेंसे किसी एकके प्रविष्ट होनेपर तीस अथवा इकतीस प्रकृति रूप स्थान होता है। विशेष इतना है कि तीर्थंकरोंके दुस्वर और अप्रशस्तविहायोगतिका उदय नहीं होता।

अब इकतीस प्रकृतियोंके नामोंका निर्देश किया जाता है। यथा– मनुष्यगति, पंचेन्द्रियजाति, औदारिक, तैजस व कार्मण शरीर, समचतुरस्रसंस्थान, औदारिकशरीरांगोपांग, वज्रर्षभ-

वण्ण-गंध-रस-फास-अगुरुअलहुअ-उवघाद-परघाद-उस्सास-पसत्थविहायगइ-तस-बादर-पज्जत्त-पत्तेयसरीर-थिराथिर-सुहासुह-सुभग-सुस्सर-आदेज्ज-जसकित्ति-णिमिण-तित्थयरं चेदि एदाओ एक्कत्तीसपयडीओ तित्थयरो उदीरेदि । एदस्स कालो जहण्णेण वासपुधत्तं, उक्कस्सेण गब्भादिअट्ठवस्सेहि ऊणा पुव्वकोडी । सेसाणं ट्ठाणाणं कालो❀ जाणियूण वत्तव्वो ।

देवगदीए एक्कवीस-पंचवीस-सत्तावीस✡अट्ठावीस-एगुणतीसउदीरणट्ठाणाणि होंति । तत्थ एक्कवीसाए पयडिपरूवणं कस्सामो । तं जहा– देवगइ-पंचिंदियजादि-तेजा-कम्मइयसरीर-वण्ण-गंध-रस-फास-देवगइपाओग्गाणुपुव्वी-अगुरुअलहुअ-तस-बादर-पज्जत्त-थिराथिर-सुहासुह-सुभग-आदेज्ज-जसगित्ति-णिमिणं चेदि । एदस्स ठाणस्स कालो जहण्णेण एगसमओ, उक्कस्सेण बे समया । सरीरे गहिदे आणुपुव्वी-मवणेदूण वेउव्वियसरीर-समचउरससंठाण-वेउव्वियसरीरंगोवंग-उवघाद-पत्तेयसरीरेसु पक्खित्तेसु पणुवीसाए ट्ठाणं होदि । सरीरपज्जत्तीए पज्जत्तयदस्स परघाद-पसत्थ-विहायगदीसु पक्खित्तासु सत्तावीसाए ट्ठाणं होदि । आणापाणपज्जत्तीए पज्जत्तयदस्स उस्सासे पविट्ठे अट्ठावीसाए ट्ठाणं होदि । भासापज्जत्तीए पज्जत्तयदस्स सुस्सरे पविट्ठे एगुणतीसाए ट्ठाणं होदि । एदस्स ट्ठाणस्स कालो जहण्णेण अंतोमुहुत्तूण-दसवस्ससहस्साणि, उक्कस्सेण अंतोमुहुत्तूणतेत्तीसं सागरोवमाणि । एदेसिं

संहनन, वर्ण, गन्ध, रस, स्पर्श अगुरुलघु, उपघात, परघात, उच्छ्वास, प्रशस्त विहायोगति, त्रस, बादर, पर्याप्त, प्रत्येकशरीर, स्थिर, अस्थिर, शुभ, अशुभ, सुभग, सुस्वर, आदेय, यशकीर्ति, निर्माण और तीर्थंकर; इन इकतीस प्रकृतियोंकी उदीरणा तीर्थंकर करते हैं। इसका काल जघन्यसे वर्षपृथक्त्व और उत्कर्षतः गर्भसे लेकर आठ वर्षोंसे हीन एक पूर्वकोटि प्रमाण है । शेष स्थानोंके कालका कथन जानकर करना चाहिये ।

देवगतिमें इक्कीस, पच्चीस, सत्ताईस, अट्ठाईस और उनतीस; ये पांच उदीरणास्थान होते हैं। उनमें इक्कीस प्रकृति रूप स्थानकी प्रकृतियोंकी प्ररूपणा करते हैं। यथा- देवगति, पंचेन्द्रिय जाति, तैजस व कार्मण शरीर, वर्ण, गन्ध, रस, स्पर्श, देवगतिप्रायोग्यानुपूर्वी, अगुरुलघु, त्रस, बादर, पर्याप्त, स्थिर, अस्थिर, शुभ, अशुभ, सुभग, आदेय, यशकीर्ति और निर्माण। इस स्थानका काल जघन्यसे एक समय और उत्कर्षसे दो समय मात्र है। शरीरके ग्रहण कर लेनेपर आनुपूर्वीको कम करके वैक्रियिकशरीर, समचतुरस्रसंस्थान, वैक्रियिकशरीरांगोपांग, उपघात और प्रत्येक-शरीर; इन पांच प्रकृतियोंको मिलानेपर पच्चीस प्रकृति रूप स्थान होता है। शरीरपर्याप्तिसे पर्याप्त होनेपर परघात और प्रशस्त विहायोगति, इन दो प्रकृतियोंको उपर्युक्त प्रकृतियोंमें मिला देनेसे सत्ताईस प्रकृति रूप स्थान होता है। आनप्राणपर्याप्तिसे पर्याप्त होनेपर उच्छ्वास प्रकृतिके प्रविष्ट होनेसे अट्ठाईस प्रकृति रूप स्थान होता है। भाषापर्याप्तिसे पर्याप्त होनेपर सुस्वरके प्रविष्ट होनेसे उनतीस प्रकृतिरूप स्थान होता है। इस स्थानका काल जघन्यसे अन्तर्मुहूर्त कम दस हजार वर्ष और उत्कर्षसे अन्तर्मुहूर्त कम तेतीस सागरोपम प्रमाण है। इन स्थानोंका एक जीवकी अपेक्षा

✡ काप्रतौ 'सेसाणं कालो' इति पाठः । ❀ काप्रतौ 'सत्ताविस' इति पाठः ।

ट्ठाणाणमेयजीवेण अंतरं णाणाजीवेहि भंगविचओ कालो अंतरमप्पाबहुअं च जाणिदूण वत्तव्वं । गोदस्स णत्थि ट्ठाणउदीरणा । अंतराइयस्स एक्कं चेव ट्ठाणं । एवं ट्ठाणपरूवणा समत्ता ।

एत्तो भुजगारुदीरणा वुच्चदे । तं जहा– दंसणावरणीयस्स अत्थि भुजगार-अप्पदर-अवट्ठिदउदीरणाओ, अवत्तव्वउदीरणा णत्थि । एवं परूवणा समत्ता ।

एत्थ सामित्तं–भुजगार-अप्पदर-अवट्ठिदाणं को उदीरगो? अण्णदरो मिच्छाइट्ठी सम्माइट्ठी वा । एवं सामित्तं समत्तं ।

कालो– भुजगार-अप्पदराणं जहण्णुक्कस्सेण एगसमओ । अवट्ठिदस्स जहण्णेण एगसमओ, उक्कस्सेण अंतोमुहुत्तं । एवं कालो समत्तो ।

अंतरं– एयजीवेण भुजगार-अप्पदराणमंतरं जहण्णुक्कस्सेण अंतोमुहुत्तं । अवट्ठिदउदीरणंतरं जहण्णुक्कस्सेण एगसमओ♠ । एवमंतरं समत्तं ।

णाणाजीवेहि भंगविचओ वुच्चदे । तं जहा– भुजगार-अप्पदर-अवट्ठिदउदीरया णियमा अत्थि । एवं णाणाजीवेहि भंगविचओ समत्तो ।

कालो– भुजगार-अप्पदर-अवट्ठिदाणं सव्वद्धा । एवं कालो समत्तो ।

अन्तर, नाना जीवोंकी अपेक्षा भंगविचय, काल, अन्तर और अल्पबहुत्वको जानकर प्ररूपणा करना चाहिये । गोत्र कर्मकी स्थानउदीरणा सम्भव नहीं है। अन्तराय कर्मका एक ही स्थान है । इस प्रकार स्थानप्ररूपणा समाप्त हुई ।

यहां भुजाकारउदीरणाका कथन करते हैं । यथा– दर्शनावरणीय कर्मकी भुजाकार अल्पतर और अवस्थित उदीरणायें हैं; अवक्तव्य उदीरणा नहीं है। इस प्रकार प्ररूपणा समाप्त हुई ।

यहां स्वामित्व–भुजाकार, अल्पतर और अवस्थित उदीरणाओंका उदीरक कौन है ? अन्यतर मिथ्यादृष्टि और सम्यग्दृष्टि जीव उनका उदीरक है। इस प्रकार स्वामित्व समाप्त हुआ ।

काल–भुजाकार और अल्पतर उदीरणाओंका काल जघन्य और उत्कर्षसे एक समय मात्र है। अवस्थित उदीरणाका काल जघन्यसे एक समय और उत्कर्षसे अन्तर्मुहूर्त प्रमाण है। इस प्रकार काल समाप्त हुआ ।

अन्तर–एक जीवकी अपेक्षा भुजाकार और अल्पतर उदीरणाओंका अन्तर जघन्यसे व उत्कर्षसे अन्तर्मुहूर्त मात्र है। अवस्थित उदीरणाका अन्तर जघन्य व उत्कर्षसे एक समय मात्र है। इस प्रकार अन्तर समाप्त हुआ ।

नाना जीवोंकी अपेक्षा भंगविचयकी प्ररूपणा की जाती है। यथा–भुजाकार, अल्पतर और अवस्थित उदीरक नियमसे हैं। इस प्रकार नाना जीवोंकी अपेक्षा भंगविचय समाप्त हुआ ।

काल– भुजाकार, अल्पतर और अवस्थित उदीरणाओंका काल सर्वदा है । इस प्रकार काल समाप्त हुआ ।

♠ ताप्रतौ ' भुजगारअप्पदराणमंतरं जहण्णुक्कस्सेण एगसमओ ' इति पाठः ।

अंतरं– भुजगार-अप्पदर-अवट्ठिदाणं णत्थि अंतरं । एवमंतरं समत्तं ।

अप्पाबहुअं– भुजगार-अप्पदरउदीरया तुल्ला थोवा । अवट्ठिदउदीरया असंखेज्जगुणा । एवमप्पाबहुगं समत्तं ।

मोहणीयस्स सामित्तं वुच्चदे– भुजगार-अप्पदर-अवट्ठिदाणमुदीरओ को होदि? अण्णदरो सम्माइट्ठी मिच्छाइट्ठी वा । अवत्तव्वउदीरओ को होदि ? मणुसो वा मणुसिणी वा देवो वा सम्माइट्ठी । एवं सामित्तं समत्तं ।

एयजीवेण कालो– भुजगारउदीरओ जहण्णेण एगसमओ, उक्कस्सेण चत्तारि समया । कुदो? वेद-कसाय-भय-दुगुंछासु कमेण उदिण्णासु चदुण्णं समयाणमुवलंभादो । अधवा सेडीदो परिवदमाणस्स हस्स-रदीहि सह एक्को, भएण एक्को, दुगुंछाए एक्को, कालगदस्स एक्को, एवं चत्तारि समया । अप्पदरस्स जहण्णमेगसमओ, उक्कस्सं तिण्णि समया । अवट्ठिदस्स जहण्णेण एगसमओ, उक्कस्सेण अंतोमुहुत्तं । अवत्तव्वस्स जहण्णुक्कस्सेण एगसमओ । एवं कालो समत्तो ।

एयजीवेण अंतरं– भुजगारस्स जहण्णेण एगसमओ, उक्कस्सेण अंतोमुहुत्तं । एवमप्पदर-अवट्ठिदाणं । अवत्तव्वं जहण्णमंतोमुहुत्तं, उक्कस्समुवड्ढपोग्गलपरियट्टं । एवमंतरं समत्तं ।

अन्तर– भुजाकार, अल्पतर और अवस्थित उदीरणाओंका अन्तर नहीं है । इस प्रकार अन्तर समाप्त हुआ ।

अल्पबहुत्व– भुजाकार और अल्पतर उदीरक दोनों तुल्य होकर स्तोक हैं । अवस्थित उदीरक उनसे असंख्यातगुणे हैं । इस प्रकार अल्पबहुत्व समाप्त हुआ ।

मोहनीयकर्मके स्वामित्वकी प्ररूपणा की जाती है– भुजाकार, अल्पतर और अवस्थित उदीरणाओंका उदीरक कौन होता है ? अन्यतर सम्यग्दृष्टि और मिथ्यादृष्टि उनका उदीरक होता है । अवक्तव्य उदीरक कौन होता है ? सम्यग्दृष्टि मनुष्य, मनुष्यनी और देव उसका उदीरक होता है । इस प्रकार स्वामित्व समाप्त हुआ ।

एक जीवकी अपेक्षा काल– भुजाकार उदीरकका काल जघन्यसे एक समय और उत्कर्षसे चार समय है, क्योंकि, वेद, कषाय, भय और जुगुप्सा प्रकृतियोंकी क्रमसे उदीरणा होनेपर चार समय पाये जाते हैं । अथवा श्रेणिसे नीचे गिरते हुए जीवके हास्य व रतिके साथ एक समय, भयके साथ एक समय, जुगुप्साके साथ एक समय, तथा मरणको प्राप्त हुएका एक समय; इस प्रकार चार समय पाये जाते हैं । अल्पतरका काल जघन्यसे एक समय और उत्कर्षसे तीन समय है । अवस्थितका काल जघन्यसे एक समय और उत्कर्षसे अन्तर्मुहूर्त प्रमाण है । अवक्तव्यका जघन्य व उत्कृष्ट काल एक समय है । इस प्रकार काल समाप्त हुआ ।

एक जीवकी अपेक्षा अन्तर– भुजाकारका अन्तर जघन्यसे एक समय और उत्कर्षसे अन्तर्मुहूर्त मात्र है । इसी प्रकार अल्पतर और अवस्थित उदीरणाका अन्तर है । अवक्तव्य उदीरणाका अन्तर जघन्यसे अन्तर्मुहूर्त और उत्कर्षसे उपार्ध पुद्गलपरिवर्तन प्रमाण है । इस प्रकार अन्तर समाप्त हुआ ।

णाणाजीवेहि भंगविचओ– भुजगार-अप्पदर-अवट्ठिदउदीरया णियमा अत्थि। सिया एदे च अवत्तव्वउदीरओ च, सिया एदे च अवत्तव्वउदीरया च धुवसहिया तिण्णि ✿। एवं णाणाजीवेहि भंगविचओ समत्तो।

कालो– अवत्तव्वउदीरयाणं जहण्णेण एगसमओ, उक्कस्सेण संखेज्जा समया। सेसाणं सव्वद्धा। एवं कालो समत्तो। अंतरं अवत्तव्वउदीरयंतरं जहण्णेण एगसमओ, उक्कस्सेण संखेज्जाणि वस्साणि। सेसाणं णत्थि अंतरं। एवमंतरं समत्तं।

अप्पाबहुअं– अवत्तव्वउदीरया थोवा। भुजगारउदीरया अणंतगुणा। अप्पदरउदीरया विसेसाहिया खवगसेडिं पडुच्च। अवट्ठिदउदीरया असंखेज्जगुणा। एवमप्पाबहुअं समत्तं।

पदणिक्खेवो– उक्कस्सिया वड्ढी कस्स ? जो उवसामओ एगपयडिउदीरओ मदो देवो जादो, ताधे अट्ठ उदीरेदि, तस्स उक्कस्सिया वड्ढी। तस्सेव उक्कस्समवट्ठाणं। उक्कस्सिया हाणी कस्स ? जो मिच्छाइट्ठी से काले संजमं पडिविज्जहिदि, संपहि भयदुगुंछाणं वेदगो, से काले पढमसमयसंजदो जादो भय-दुगुंछाणमवेदगो,

---

नाना जीवोंकी अपेक्षा भंगविचय— भुजाकार, अल्पतर और अवस्थित उदीरक नियमसे हैं। कदाचित् ये व अवक्तव्यउदीरक एक, कदाचित् ये व अवक्तव्यउदीरक बहुत, इस प्रकार इन दो भंगोंमें ध्रुवभंगको मिलानेपर तीन भंग होते हैं। इस प्रकार नाना जीवोंकी अपेक्षा भंगविचय समाप्त हुआ।

काल– अवक्तव्यउदीरकोंका काल जघन्यसे एक समय और उत्कर्षसे संख्यात समयप्रमाण है। शेष उदीरकोंका काल सर्वदा है। इस प्रकार काल समाप्त हुआ।

अन्तर– अवक्तव्यउदीरकोंका अन्तर जघन्यसे एक समय और उत्कर्षसे संख्यात वर्षप्रसाण है। शेष उदीरकोंका अन्तर सम्भव नहीं है। इस प्रकार अम्तर समाप्त हुआ।

अल्पबहुत्व– अवक्तव्यउदीरक स्तोक हैं। उनसे भुजाकारउदीरक अनन्तगुणे हैं। उनसे क्षपकश्रेणिकी अपेक्षा अल्पतरउदीरक विशेष अधिक हैं। अर्थात् क्षपकश्रेणिमें मोहनीयका अल्पतर पद ही होता है, भुजाकार पद नहीं होता; इस अपेक्षासे भुजाकार उदीरकोंसे अल्पतर उदीरक विशेष अधिक कहे गये हैं। इनसे अवस्थितउदीरक असंख्यातगुणे हैं। इस प्रकार अल्पबहुत्व समाप्त हुआ।

पदनिक्षेप– उत्कृष्ट वृद्धि किसके होती है ? जो उपशामक एक प्रकृतिका उदीरक होता हुआ मृत्युको प्राप्त होकर देव हुआ है, तब वह आठकी उदीरणा करता है, उसके उत्कृष्ट वृद्धि होती है। उसीके (अनन्तर समयमें) उत्कृष्ट अवस्थान होता है। उत्कृष्ट हानि किसके होती है? जो मिथ्यादृष्टि अनन्तर समयमें संयमको प्राप्त होगा वह अभी भय व जुगुप्साका वेदक है, अनन्तर समयमें वह प्रथमसमयवर्ती संयत होकर उनका अवेदक हो जाता है, उस मिथ्यात्वसे

✿ भुज० अप्प० अवट्ठि० उदीर० णिय० अत्थि। सिया एदे च अवत्तव्वओ च सिया एदे च अवत्तव्वगा च भंगा तिण्णि ३। जयध. अ. प. ७६७.

तस्स मिच्छत्तपच्छायदस्स पढमसमयसंजदस्स उक्कस्सिया हाणी। एवं सामित्तं समत्तं।

हाणी थोवा, वड्ढी अवट्ठाणं च विसेसाहियं। जहण्णिया वड्ढी जहण्णिया हाणी जहण्णमवट्ठाणं च एया पयडी। सेसं चिंतिय वत्तव्वं। एवं पदणिक्खेवो समत्तो।

एत्तो वड्ढिउदीरणा-- अत्थि संखेज्जभागवड्ढि-संखेज्जगुणवड्ढिउदीरओ, एदेसिं चेव हाणीओ अवट्ठाणमवत्तव्वं च।

अवत्तव्वउदीरया थोवा। संखेज्जगुणहाणिउदीरया संखेज्जगुणा। संखेज्जगुणवड्ढिउदीरया संखेज्जगुणा। संखेज्जभागवड्ढिउदीरया अणंतगुणा। संखेज्जभागहाणिउदीरया विसेसाहिया। अवट्ठिदउदीरया असंखेज्जगुणा। एवं णामकम्मस्स वि जाणिऊण वत्तव्वं। पयडिउदीरणा समत्ता।

ठिदिउदीरणा♣ दुविहा– मूलपयडिट्ठिदिउदीरणा उत्तरपयडिट्ठिदिउदीरणा चेदि। मूलपयडिट्ठिदिउदीरणा दुविहा– जहण्णिया उक्कस्सिया चेदि। तत्थ उक्कस्सिया ठिदिउदीरणा णाणावरणीय-दंसणावरणीय-वेयणीय-अंतराइयाणं तीसं सागरोवमकोडाकोडीओ बेहि आवलियाहि ऊणाओ✡। एवं णामा-गोदाणं। णवरि वीसं सागरोवम-

---

आये हुए प्रथम समयवर्ती संयतके उत्कृष्ट हानि होती है। इस प्रकार स्वामित्व समाप्त हुआ।

हानि स्तोक है, उससे वृद्धि और अवस्थान दोनों समान होकर विशेष अधिक हैं। जघन्य वृद्धि, जघन्य हानि और जघन्य अवस्थान एक प्रकृति स्वरूप हैं। शेष प्ररूपणा विचार कर करना चाहिये। इस प्रकार पदनिक्षेप समाप्त हुआ।

यहां वृद्धिउदीरणा– संख्यातभागवृद्धिउदीरक और संख्यातगुणवृद्धिउदीरक हैं। इनकी ही हानियोंके उदीरक अर्थात् संख्यातभागहानि और संख्यातगुणहानि उदीरक, अवस्थानउदीरक तथा अवक्तव्यउदीरक हैं।

अवक्तव्यउदीरक स्तोक हैं। उनसे संख्यातगुणहानिउदीरक संख्यातगुण हैं। उनसे संख्यातगुणवृद्धिउदीरक संख्यातगुणे हैं। उनसे संख्यातभागवृद्धिउदीरक अनन्तगुणे हैं। इसी प्रकारसे नामकर्मकी भी प्ररूपणा जानकर करना चाहिये। प्रकृतिउदीरणा समाप्त हुई।

स्थितिउदीरणा दो प्रकारकी है– मूलप्रकृतिस्थितिउदीरणा और उत्तरप्रकृतिस्थितिउदीरणा। मूलप्रकृतिस्थितिउदीरणा दो प्रकारकी है– जघन्य और उत्कृष्ट। उनमें ज्ञानावरणीय, दर्शनावरणीय, वेदनीय और अन्तरायकी उत्कृष्ट स्थितिउदीरणा दो आवलियोंसे हीन तीस कोडाकोडि सागरोपम प्रमाण है। इसी प्रकार नाम और गोत्र कर्मकी भी स्थितिउदीरणा समझना चाहिये।

♣ संपत्तिए य उदए पओगओ दिस्सए उईरणा सा। सेची (वी) का-ठिइहिं ता जाहिं तो तत्तिगा एसा। क. प्र. ४, २९. तथा चाह--- या स्थितिरकालप्राप्तापि सती प्रयोगत उदीरणाप्रयोगेण संप्राप्त्युदए पूर्वोक्तस्वरूपे प्रक्षिप्ता सती दृश्यते केवल-चक्षुषा सा स्थित्युदीरणा (मलयगिरि)।

✡ तत्रोदये सति यासां प्रकृतीनामुत्कृष्टो बन्धः सम्भवति तासामुत्कर्षत आवलिकाद्विकहीना सर्वाप्युत्कृष्टा स्थितिरुदीरणाप्रायोग्या। क. प्र. ४, २९ (मलय.)।